सूरह — एक कहानी

सूरह अल-हिज्र

पत्थर की वादी

पूरा सफ़र — वो किताब जिसकी हिफ़ाज़त की जाती है —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 15 • 99 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

रुबमा यवद्दुल्-लज़ीन कफ़रू लौ कानू मुस्लिमीन
2. शायद वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया चाहेंगे कि काश वो मुसलमान होते।

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्-ज़िक्र व इन्ना लहू ल-हाफ़िज़ून
9. बेशक हमने ही ये ज़िक्र उतारा, और बेशक हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।

व इम्-मिन शै-इन इल्ला 'इन्दना ख़ज़ा-इनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़दरिम्-म'अ्लूम
21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और हम उसे एक मालूम अंदाज़े से ही उतारते हैं।

इन्न 'इबादी लैस लक 'अलैहिम सुल्तान
42. बेशक मेरे बंदों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं।

व मंय्यक़्नतु मिर्-रहमति रब्बिही इल्लज़्-ज़ाल्लून
56. और अपने रब की रहमत से कौन मायूस होता है सिवाए गुमराहों के?

वअ्बुद रब्बक हत्ता यअ्तियकल्-यक़ीन
99. और अपने रब की इबादत करो यहाँ तक कि तुम्हारे पास यक़ीन (मौत) आ जाए।

शायद वो चाहेंगे

बेटा, ये सूरह 'अलिफ़ लाम रा' हर्फ़ों से खुलती है, और फिर एक ऐसा जुमला जो अपने अंदर एक पूरी ज़िंदगी की नदामत उठाए हुए है:

'रुबमा यवद्दुल्-लज़ीन कफ़रू लौ कानू मुस्लिमीन — शायद वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया चाहेंगे कि काश वो मुसलमान होते।'

बेटा, 'यवद्दु' कोई हल्का लफ़्ज़ नहीं — इसका मतलब है शिद्दत से **चाहना**, किसी चीज़ की गहरी ख़्वाहिश करना। और उलमा ने समझाया कि ये चाहत उन लम्हों में आती है जब हक़ ना-क़ाबिल-ए-इनकार हो जाता है: मौत पर, जब हक़ीक़त खुल जाती है, और उस दिन जब मोमिनीन को सलामती की तरफ़ ले जाया जाता है।

बेटा, ग़ौर कीजिए पूरी सूरह यहीं से खुलती है — **एक ऐसे शख़्स की तस्वीर से जो चाहता है कि काश उसने अलग इंतेख़ाब किया होता।** यही उस सब का फ़्रेमवर्क है जो आगे आता है।

'**ज़र्हुम यअ्कुलू व यतमत्त'ऊ व युल्हिहिमुल्-अमलु फ़-सौफ़ यअ्लमून — उन्हें छोड़ दो कि खाएँ और मज़े उड़ाएँ और (झूठी) उम्मीद उन्हें ग़ाफ़िल किए रखे, तो वो जान लेंगे।**'

बेटा, तीन लफ़्ज़ जीने का पूरा अंदाज़ बयान करते हैं: खाना, मज़े उड़ाना, और '**अल-अमल**' — दूर तक की उम्मीद, ये हमेशा का फ़र्ज़ कि बाद में वक़्त है। और फ़ैसला: 'फ़-सौफ़ यअ्लमून', वो मालूम कर लेंगे।

'**व मा अह्लक्ना मिन क़र्यतिन इल्ला व लहा किताबुम्-म'अ्लूम** — और हमने कोई बस्ती तबाह नहीं की मगर उस के लिए एक **मालूम मुद्दत** थी — **मा तस्बिक़ु मिन उम्मतिन अजलहा व मा यस्तअ्ख़िरून** — कोई क़ौम अपनी मुद्दत से न आगे बढ़ सकती है न पीछे।'

बेटा, ये क़ौमों पर भी लागू होता है और लोगों पर भी। **कुछ वक़्त से पहले नहीं आता; कुछ देर से नहीं।**

और मुंकिरों ने आप ﷺ का मज़ाक़ उड़ाया, कहते हुए: '**या अय्युहल्-लज़ी नुज़्ज़िल 'अलैहिज़्-ज़िक्रु इन्नक ल-मज्नून** — ऐ वो जिस पर ये पैग़ाम उतारा गया, **तू दीवाना है! लौ मा तअ्तीना बिल्-मलाइकति इन कुन्त मिनस्-सादिक़ीन** — तू हमारे पास फ़रिश्ते क्यों नहीं लाता, अगर तू सचा है?'

और अल्लाह का जवाब, बेटा: '**मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइकत इल्ला बिल्-हक़्क़ि व मा कानू इज़म्-मुन्ज़रीन** — हम फ़रिश्तों को हक़ के साथ ही उतारते हैं, और फिर उन्हें कोई मोहलत न दी जाएगी।' यानी: **जब फ़रिश्ते उस तरह आएँगे जैसा तुम माँग रहे हो, तब चुनने का वक़्त ख़त्म हो चुका होगा।**

हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे

और अब, बेटा, पूरे क़ुरआन की सब से अहम आयतों में से एक — एक वादा जो

अल्लाह ने अपनी ही किताब के बारे में किया:

'इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्-ज़िक्र व इन्ना लहू ल-हाफ़िज़ून — बेशक, हमने ही ये ज़िक्र उतारा, और बेशक, हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।'

बेटा, अरबी में भरी हुई ताकीद देखिए: 'इन्ना' — बेशक। 'नह्नु' — **हम**, अलग से ज़ोर के लिए बयान। 'इन्ना लहू **ल**-हाफ़िज़ून' — और हम यक़ीनन इसके निगेहबान हैं।

और बेटा, सोचिए कि ये वादा अमल में क्या मायने रखता रहा।

इस से पहले की हर वही लोगों के सुपुर्द की गई थी कि वो उसे महफ़ूज़ रखें — और सदियों में, हिस्से खो गए, बदल दिए गए, तर्जुमा और फिर तर्जुमा होते रहे यहाँ तक कि अस्ल अल्फ़ाज़ बहाल न हो सके।

ये किताब, अल्लाह ने ख़ुद अपने ज़िम्मे ली।

और जो तरीक़ा उन्होंने इस्तेमाल किया वो ग़ौर करने लायक़ है। उन्होंने इसे सिर्फ़ लिखावट में महफ़ूज़ नहीं किया — काग़ज़ जलता है और सियाही मद्धम पड़ती है। **उन्होंने इसे दिलों में महफ़ूज़ किया।** पहली नस्ल से आज तक, हमेशा हज़ारों पर हज़ारों लोग रहे हैं, हर बर-ए-आज़म में, जो पूरा क़ुरआन याद में उठाए हैं, हर्फ़ ब हर्फ़, उसी तरतीब में, उसी लफ़्ज़ के साथ।

बेटा, हर दौर में, मोरक्को से इंडोनेशिया तक, एक बच्चा जिसने इसे याद किया हो एक दूसरे मुल्क के उस बच्चे के सामने परखा जा सकता है जिसे वो कभी मिला नहीं, और मतन मेल खाता है। **ये कोई इंसानी कारनामा नहीं। ये एक वादा है जो पूरा किया जा रहा है।**

और बेटा, ये आयत अज़ीम सुकून का सरचश्मा भी है। कोई भी नस्ल इस दीन के साथ चाहे जो करे — इस का ग़लत इस्तेमाल, ग़लत पेश-कश, इस पर हमला, इस का मज़ाक़ — **अस्ल मतन ख़ुद पहुँच से परे है।** बाक़ी हर चीज़ पर बहस हो सकती है; ये अल्फ़ाज़ बदले नहीं जा सकते।

फिर सूरह नबी ﷺ को तसल्ली देती है: **'व लक़द अर्सल्ना मिन क़ब्लिक फ़ी शिय'इल्-अव्वलीन** — और हमने तुमसे पहले पहले लोगों के फ़िरक़ों में रसूल भेजे

— **व मा यअ्तीहिम मिर्-रसूलिन इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन** — और उनके पास कोई रसूल न आया मगर ये कि वो **उस का मज़ाक़ उड़ाते** थे।'

बेटा, **मज़ाक़ हक़ के ख़िलाफ़ सब से पुराना हथियार है, और ये आज भी सब से आम है। इसे न कोई दलील चाहिए और न कोई सबूत।**

हमारे पास उसके ख़ज़ाने हैं

फिर सूरह आसमान और ज़मीन की तरफ़ मुड़ती है, बेटा, और कुछ क़ाबिल-ए-ज़िक्र आयतें देती है।

'**व लक़द ज'अल्ना फ़िस्-समा-इ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्-नाज़िरीन** — और हमने आसमान में बड़े **सितारे** रखे और उन्हें देखने वालों के लिए ख़ूबसूरत बनाया।'

'**वल्-अर्ज़ मददनाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासिय व अम्बत्ना फ़ीहा मिन कुल्लि शै-इम्-मौज़ून** — और ज़मीन को हमने फैलाया और उस में मज़बूत पहाड़ रखे, और उस में हर चीज़ एक **नापे हुए अंदाज़े** से उगाई।'

बेटा, 'मौज़ून' — **तोला** हुआ, नापा हुआ, मुतनासिब। **कुछ बे-तरतीब नहीं उगता; हर चीज़ ठीक मिक़्दार में निकलती है।**

'**व ज'अल्ना लकुम फ़ीहा म'आयिश व मल्-लस्तुम लहू बि-राज़िक़ीन** — और हमने उस में तुम्हारे लिए ज़िंदगी के सामान बनाए, **और उन के लिए भी जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते।**'

बेटा, इसे ग़ौर कीजिए: **अल्लाह उन मख़्लूक़ात को रिज़्क़ देते हैं जिन्हें तुम नहीं खिलाते** — हर परिंदा, हर कीड़ा, गहराई की हर मछली। और तुम अपने रिज़्क़ की फ़िक्र में थे।

और फिर, बेटा, एक आयत जिसे अपने दिल पर लिख लेने के लायक़ है:

'**व इम्-मिन शै-इन इल्ला 'इन्दना ख़ज़ा-इनुहू — और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों — व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़दरिम्-म'अ्लूम — और हम उसे एक मालूम, मुक़र्रर अंदाज़े से ही उतारते हैं।**'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। हर चीज़ जिसकी तुम्हें कभी ज़रूरत हो सकती है — सेहत, रिज़्क़, इल्म, एक शरीक-ए-हयात, एक बच्चा, एक मुश्किल से राहत — **उस सब के ख़ज़ाने उन के पास हैं। किसी चीज़ की कमी नहीं। कुछ ख़त्म नहीं हुआ।**

और वो उसे 'बि-क़दरिम्-म'अ्लूम' — एक मालूम, ठीक अंदाज़े से जारी करते हैं। **तुम्हारी ज़रूरत से कम नहीं, और उस से ज़्यादा नहीं जितना तुम उठा सको।**

बेटा, इसे अगली बार याद रखिए जब आपको लगे कि एक दरवाज़ा बंद हो गया। **ख़ज़ाना ख़ाली नहीं हुआ; जारी करना नापा गया था।**

'**व अर्सल्नार्-रियाह लवाक़िह फ़-अन्ज़ल्ना मिनस्-समा-इ मा-अन फ़-अस्क़ैनाकुमूह** — **और हम हवाओं को बार-आवर बना कर भेजते हैं**, और आसमान से पानी उतारते हैं और तुम्हें पिलाते हैं — **व मा अन्तुम लहू बि-ख़ाज़िनीन** — **और तुम उस के ख़ज़ांची नहीं हो।**'

बेटा, 'लवाक़िह' — इस लफ़्ज़ में बार-आवर करने, गर्द-अफ़्शानी और हमल ठहराने के मानी हैं। हवाएँ पौदों के दरमियान ज़र-ए-गुल ले जाती हैं और उन बादलों को चलाती हैं जो बारिश उठाते हैं।

और 'मा अन्तुम लहू बि-ख़ाज़िनीन' — तुम वो नहीं जो ये पानी जमा करते हो। तुमने बादल या ज़मीन के ज़ख़ीरे नहीं भरे। **तुम एक ऐसी मेज़ पर मेहमान हो जो तुमने नहीं सजाई।**

'**व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व नह्नुल्-वारिसून** — और बेशक, हम ही ज़िंदगी देते और मौत देते हैं, **और हम ही (सब के) वारिस हैं।**'

वो इनकार, और दुश्मन की हदें

फिर सूरह आदम की तख़्लीक़ सुनाती है, बेटा, उस माद्दे के एक ग़ैर-मामूली वाज़ेह बयान के साथ:

'**व लक़द ख़लक़्नल्-इंसान मिन सल्सालिम्-मिन हम-इम्-मस्नून** — **और हमने यक़ीनन इंसान को सूखी ठीकरी जैसी मिट्टी से बनाया, बदली हुई काली कीचड़ से**

— **वल्-जान्न ख़लक़्नाहु मिन क़ब्लु मिन नारिस्-समूम** — और जिन्न को हमने उस से पहले **झुलसाने वाली आग** से बनाया।'

बेटा, 'सल्साल' वो सूखी मिट्टी है जो ठोंकने पर आवाज़ दे; 'हम-इम्-मस्नून' गहरी, ढाली हुई कीचड़ है। यही वो है जिस से तुम बने।

'**फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्-रूही फ़-क़'ऊ लहू साजिदीन** — तो जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ, **तो उस के आगे सजदे में गिर पड़ना।**'

और तमाम फ़रिश्तों ने सजदा किया — '**इल्ला इब्लीस अबा अंय्यकून म'अस्-साजिदीन** — **सिवाए इब्लीस के; उसने** सजदा करने वालों के साथ होने से **इनकार** किया।'

उस से पूछा गया क्यों, और उसने अपनी वजह दी: '**लम अकुल्-लि-अस्जुद लि-बशरिन ख़लक़्तहू मिन सल्सालिम्-मिन हम-इम्-मस्नून** — मैं एक ऐसे इंसान को सजदा न करूँगा जिसे तूने सूखी ठीकरी जैसी मिट्टी से, बदली हुई काली कीचड़ से बनाया।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **वो बार बार माद्दे पर लौटता है। उसकी पूरी दलील बस यही थी — माद्दों का मुक़ाबला।**

उसे निकाल दिया गया, और उसने क़ियामत के दिन तक मोहलत माँगी, और ये दे दी गई। और फिर उसने अपना मंसूबा एलान किया:

'**रब्बि बिमा अग़्वैतनी ल-उज़य्यिनन्न लहुम फ़िल्-अर्ज़ि व ल-उग़्वियन्नहुम अज्म'ईन** — **मेरे रब, क्योंकि तूने मुझे गुमराही में डाला, मैं ज़रूर उन के लिए ज़मीन में (ना-फ़रमानी को) ख़ूबसूरत बनाऊँगा, और मैं उन सब को गुमराह करूँगा** — **इल्ला 'इबादक मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन** — **सिवाए उन के, तेरे चुने हुए, ख़ालिस बंदों के।**'

बेटा, उसका बयान किया गया तरीक़ा ग़ौर कीजिए: '**ल-उज़य्यिनन्न**' — मैं इसे **ख़ूबसूरत** बनाऊँगा, इसे पुर-कशिश दिखाऊँगा। **यही उसकी पूरी टेक्नीक है। वो**

किसी को मजबूर नहीं करता; वो कर ही नहीं सकता। वो सजाता है। वो नुक़सान-देह को दिलकश, ग़लत को माक़ूल, और देर को समझदारी दिखाता है।

और फिर अल्लाह का जवाब, बेटा — और ये क़ुरआन के सब से तसल्ली-बख़्श बयानात में से एक है:

'**क़ाल हाज़ा सिरातुन 'अलय्य मुस्तक़ीम** — उसने कहा: **ये एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक जाता है — इन्न 'इबादी लैस लक 'अलैहिम सुल्तानुन इल्ला मनित्-तब'अक मिनल्-ग़ावीन — बेशक, मेरे बंदों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं, सिवाए उन के जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें।**'

बेटा, 'लैस लक 'अलैहिम सुल्तान' — उन पर तेरा **कोई इख़्तियार नहीं।** बिल्कुल नहीं। **वो तुमसे कुछ भी नहीं करवा सकता।**

बेटा, समझिए तुम्हारी अपनी जद्दो-जहद के लिए इसका मतलब क्या है। शैतान के पास ठीक एक ताक़त है: **वस्वसा।** वो फुसफुसा सकता, सजा सकता, और तुम्हें एक बहाना याद दिला सकता है। **वो तुम्हारा हाथ हिला नहीं सकता, कोई ऐप खोल नहीं सकता, तुम्हारी ज़ुबान से एक लफ़्ज़ बोल नहीं सकता, या तुम्हारे लिए एक क़दम भी उठा नहीं सकता।**

तो जब एक शख़्स कहता है 'शैतान ने मुझ से करवाया', ये आयत उसे जवाब देती है। **उसने पेश किया; तुमने क़ुबूल किया।** और ये अस्ल में अच्छी ख़बर है — क्योंकि इसका मतलब है कि फ़ैसला हमेशा तुम्हारा था, जिसका मतलब है कि **तुम अलग फ़ैसला कर सकते हो।**

और ग़ौर कीजिए उस वाहिद गिरोह पर जो उसकी पहुँच से बाहर नाम किया गया, बेटा — वही जो सूरह साद में था: '**अल-मुख़्लसीन**', वो जिन्हें सिर्फ़ अल्लाह के लिए ख़ालिस और पाक बना दिया गया।

फिर सूरह परहेज़गारों के लिए बाग़ और चश्मे बयान करती है, और कहती है: '**उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन आमिनीन — उस में सलामती के साथ, अमन से दाख़िल हो जाओ — व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन इख़्वानन 'अला सुरुरिम्-मुतक़ाबिलीन — और हम उनके सीनों में जो रंजिश होगी उसे निकाल देंगे**, तो वो

भाई बन कर तख़्तों पर **एक दूसरे के सामने** होंगे।'

बेटा, देखिए जन्नत से लुत्फ़ उठाने से पहले क्या निकालना पड़ता है: '**ग़िल्ल**' — रंजिशें, कुदूरत, वो पुरानी तल्ख़ी जो हम एक दूसरे के बारे में उठाए फिरते हैं। अल्लाह उसे उनके सीनों से निकाल देते हैं।

और फिर वो 'एक दूसरे के सामने' बैठते हैं — क्योंकि **तुम उस के सामने आराम से नहीं बैठ सकते जिस से तुम्हें रंजिश हो।** बेटा, उस ऑपरेशन के लिए जन्नत का इंतेज़ार क्यों? **ग़िल्ल अब निकालना शुरू कीजिए।**

'**ला यमस्सुहुम फ़ीहा नसबुंव्-व मा हुम मिन्हा बि-मुख़्रजीन** — उस में उन्हें कोई थकान न छुएगी, न वो उस से निकाले जाएँगे।'

और फिर, बेटा, वो तवाज़ुन जो ये दीन हमेशा रखता है: '**नब्बिअ् 'इबादी अन्नी अनल्-ग़फ़ूरुर्-रहीम — मेरे बंदों को ख़बर दो कि मैं ही बख़्शने वाला, रहम वाला हूँ — व अन्न 'अज़ाबी हुवल्-'अज़ाबुल्-अलीम — और ये कि मेरा अज़ाब ही दर्दनाक अज़ाब है।**'

बेटा, दोनों आयतें जान-बूझ कर बग़ल-बग़ल रखी गईं। **ख़ौफ़ के बग़ैर उम्मीद एक शख़्स को बे-परवाह बना देती है; उम्मीद के बग़ैर ख़ौफ़ उसे मायूस कर देता है। एक मोमिन दोनों के साथ चलता है।**

मेहमान, और दो बर्बाद क़ौमें

फिर सूरह उन मेहमानों का ज़िक्र करती है जो इब्राहीम (अलैहि0) के पास आए — इंसानी शक्ल में फ़रिश्ते — और कैसे वो उन से ख़ौफ़ज़दा हुए, और उन्होंने कहा: '**ला तौजल इन्ना नुबश्शिरुक बि-ग़ुलामिन 'अलीम — मत डरो; हम तुम्हें एक इल्म वाले लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं।**'

और उन्होंने हैरत से पूछा कि ख़ुशख़बरी कैसे हो सकती है जब बुढ़ापा उन पर आ चुका। और उन्होंने कहा: '**बश्शर्नाकि बिल्-हक़्क़ि फ़-ला तकुम्-मिनल्-क़ानितीन — हमने तुम्हें हक़ के साथ ख़ुशख़बरी दी है, तो मायूस होने वालों में से मत बनो।**'

और उनका जवाब, बेटा, एक याद रखने लायक़ लाइन है: '**व मंय्यक़्नतु मिर्-रहमति रब्बिही इल्लज़्-ज़ाल्लून — और अपने रब की रहमत से कौन मायूस होता है सिवाए गुमराहों के?**'

बेटा, ये एक सख़्त बयान है, और ये एक नबी की तरफ़ से है। **अल्लाह की रहमत से मायूस होना आजिज़ी नहीं — क़ुरआन इसे गुमराही के साथ रखता है।**

फ़रिश्ते फिर लूत (अलैहि0) की क़ौम की तरफ़ गए, और उनके घरवाले बचा लिए गए सिवाए उनकी बीवी के। और बस्ती उलट दी गई, और उस पर सख़्त मिट्टी के पत्थर बरसाए गए।

'**इन्न फ़ी ज़ालिक ल-आयातिल्-लिल्-मुतवस्सिमीन** — बेशक, उस में **उन के लिए निशानियाँ हैं जो ग़ौर से देखते हैं।**' बेटा, 'अल-मुतवस्सिमीन' वो हैं जो चीज़ों की सतह पर निशान पढ़ते हैं — बसीरत वाले लोग, जो एक खंडहर देखते और समझ जाते हैं कि एक क़ौम के साथ क्या हुआ, और क्यों।

'**व इन्नहा ल-बि-सबीलिम्-मुक़ीम** — और बेशक, वो बस्तियाँ एक क़ायम रास्ते पर हैं।' बेटा, यानी: **खंडहर एक ऐसे रास्ते पर हैं जहाँ से लोग आज भी गुज़रते हैं। सबूत किसी म्यूज़ियम में छुपा नहीं; ये शाहराह के किनारे पड़ा है।**

और फिर, बेटा, वो लोग जो इस सूरह को उसका नाम देते हैं: '**व लक़द कज़्ज़ब अस्हाबुल्-हिज्रिल्-मुर्सलीन** — और **अल-हिज्र वालों** ने यक़ीनन रसूलों को झुठलाया।'

ये समूद थे, सालेह (अलैहि0) की क़ौम, जिन्होंने अपने घर पहाड़ों के चेहरों में तराशे।

'**व कानू यन्हितून मिनल्-जिबालि बुयूतन आमिनीन — और वो पहाड़ों में से घर तराशते थे, ख़ुद को महफ़ूज़ समझते हुए।**'

बेटा, 'आमिनीन' — **महफ़ूज़** महसूस करते हुए। और देखिए उस सलामती के लिए उन्होंने क्या बनाया: ख़ैमे नहीं, ईंट नहीं — **ठोस चट्टान में काटे गए घर, जो हमेशा रहने के लिए थे।**

'**फ़-अख़ज़त्हुमुस्-सैहतु मुस्बिहीन — तो एक चीख़ ने उन्हें सुब्ह के वक़्त पकड़**

लिया — फ़-मा अग़्ना 'अन्हुम मा कानू यक्सिबून — और जो उन्होंने कमाया वो उनके कुछ काम न आया।'

बेटा, **एक आवाज़। बस इतना काफ़ी था।** वो पहाड़ी घर आज भी खड़े हैं, ख़ाली, अरब के शुमाल-मग़रिब में — और नबी ﷺ एक मुहिम पर अपने सहाबा के साथ उस जगह से गुज़रे, और आपने अपना सर ढाँप लिया और उन्हें तेज़ गुज़रने को कहा, और उनसे फ़रमाया कि उन लोगों के घरों में दाख़िल न हों जिन्होंने अपने आप पर ज़ुल्म किया सिवाए रोते हुए, कहीं वो चीज़ तुम्हें न पहुँचे जो उन्हें पहुँची।

बेटा, इस से सीखिए: **कोई इमारत तुम्हें अल्लाह के फ़ैसले से नहीं बचाती। और खंडहर एक मोमिन के लिए सैर-गाह नहीं — वो तंबीहें हैं।**

सात बार बार दोहराई जाने वाली

और फिर, बेटा, अल्लाह अपने रसूल ﷺ को एक ऐसे तोहफ़े की याद दिलाते हैं जो मुंकिरों के पास जो कुछ था उस सब से बड़ा है:

'व लक़द अतैनाक सब्'अम्-मिनल्-मसानी वल्-क़ुरआनल्-'अज़ीम — और हमने तुम्हें यक़ीनन सात बार बार दोहराई जाने वाली आयतें और अज़ीम क़ुरआन दिया।'

बेटा, 'सब्'अम्-मिनल्-मसानी' — सात बार बार दोहराई जाने वाली — की तशरीह ख़ुद नबी ﷺ ने **सूरह अल-फ़ातिहा** के तौर पर की। आपने एक सहाबी से फ़रमाया कि वो उन्हें मस्जिद से निकलने से पहले क़ुरआन की सब से अज़ीम सूरह सिखाएँगे, और फिर अल-फ़ातिहा सिखाई, ये कहते हुए कि यही सात बार बार दोहराई जाने वाली आयतें और अज़ीम क़ुरआन है जो उन्हें दिया गया।

बेटा, इस आयत की जगह के बारे में सोचिए। ये ठीक तबाह-शुदा क़ौमों के बयान के बाद आती है और ठीक उस हिदायत से पहले कि मुंकिरों के पास जो है उस पर ग़म करना छोड़ दो।

'ला तमुद्दन्न 'ऐनैक इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम — अपनी आँखें उस की तरफ़ मत फैलाओ जो हमने उन में से कुछ गिरोहों को मज़े के लिए दिया — व

ला तह्ज़न 'अलैहिम — और उन पर ग़म मत करो — वख़्फ़िज़ जनाहक लिल्-मुअ्मिनीन — और मोमिनीन के लिए अपना बाज़ू झुका दो।'

बेटा, किया जा रहा मुक़ाबला देखिए। उन के पास दौलत, ओहदा, आराम है। **तुम्हारे पास अल-फ़ातिहा और क़ुरआन है।** जो उन्हें दिया गया उस की तरफ़ तिरछी नज़र मत डालो — तुम्हें वो दिया गया जो ख़रीदा नहीं जा सकता।

और 'वख़्फ़िज़ जनाहक लिल्-मुअ्मिनीन' — मोमिनीन के लिए अपना बाज़ू झुका दो, वही नर्मी का अंदाज़ जिसका हुक्म माँ-बाप के लिए दिया गया। **अपने लोगों के साथ नर्म रहो।**

'**व क़ुल इन्नी अनन्-नज़ीरुल्-मुबीन** — और कहो: मैं खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।'

यहाँ तक कि यक़ीन आ जाए

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, तीन हिदायतों और एक वादे के साथ — और इन में से हर एक एक दबाव में आए शख़्स के लिए है।

'फ़स्द'अ बिमा तुअ्मरु व अअ्रिज़ 'अनिल्-मुश्रिकीन — तो जो तुम्हें हुक्म दिया गया उसे खुले-आम एलान करो, और मुश्रिकों से मुँह मोड़ लो।'

बेटा, 'फ़स्द'अ' का मतलब किसी चीज़ को चीर कर खोल देना, काट कर गुज़रना — तो: **इसे साफ़ साफ़ बयान करो, बिना लग-लपेट के।** और उसी वक़्त, 'अअ्रिज़' — **झगड़ा ढूँढने वालों से मुँह मोड़ लो।** हक़ साफ़ कहो, और उस पर लड़ाइयों में मत घसीटे जाओ।

'इन्ना कफ़ैनाकल्-मुस्तह्ज़िईन — बेशक, हम मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबले में तुम्हारे लिए काफ़ी हैं।'

बेटा, क्या वादा है। मक्का में ऐसे लोग थे जिन्होंने उनका मज़ाक़ उड़ाना अपना पेशा बना लिया था — और अल्लाह ने कहा: **हम उन्हें देख लेंगे। तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं।**

बेटा, इसे ज़ाती तौर पर लीजिए। **तुमसे हर ताने का जवाब देना और हर तनाज़ुर**

जीतना ज़रूरी नहीं। कुछ चीज़ें तुम सौंप देते हो।

'व लक़द नअ्लमु अन्नक यज़ीक़ु सद्रुक बिमा यक़ूलून — और हम पहले ही जानते हैं कि जो वो कहते हैं उस से तुम्हारा सीना तंग होता है।'

बेटा, यहाँ एक लम्हे के लिए रुकिए। अल्लाह उनसे ये नहीं कहते 'बुरा मत मानो'। वो कहते हैं: **हम जानते हैं कि तुम्हारा सीना तंग है।** वो कुछ तजवीज़ करने से पहले दर्द को तस्लीम करते हैं।

और फिर नुस्ख़ा: **'फ़-सब्बिह बि-हम्दि रब्बिक व कुम्-मिनस्-साजिदीन — तो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करो और सजदा करने वालों में से हो जाओ — वअ्बुद रब्बक हत्ता यअ्तियकल्-यक़ीन — और अपने रब की इबादत करो यहाँ तक कि तुम्हारे पास यक़ीन आ जाए।'**

बेटा, तंग सीने के लिए दिया गया इलाज देखिए: **तस्बीह, सुजूद, और इबादत।** तवज्जोह हटाना नहीं। फ़रार नहीं। **ज़मीन पर जाओ।**

और आख़िरी जुमला, बेटा: 'हत्ता यअ्तियकल्-यक़ीन' — यहाँ तक कि **यक़ीन** तुम्हारे पास आ जाए। उलमा इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि यहाँ 'अल-यक़ीन' से मुराद **मौत** है — वो वाहिद चीज़ जिस में किसी को शक नहीं।

तो इस सूरह की आख़िरी हिदायत है: **इबादत करते रहो यहाँ तक कि तुम मर जाओ।**

बेटा, और इस में कुछ अहम है। **इबादत की कोई रिटायरमेंट की उम्र नहीं और कोई ग्रेजुएशन नहीं।** कोई ऐसा दर्जा नहीं जहाँ एक शख़्स काफ़ी कर चुका हो और रुक सके। कुछ लोग समझते हैं कि वो बाद में दीनदार हो जाएँगे, या ये कि उन्होंने काफ़ी नेकियाँ जमा कर ली हैं। **ये आयत दोनों दरवाज़े बंद कर देती है: 'यहाँ तक कि यक़ीन तुम्हारे पास आ जाए।'**

और बेटा, ग़ौर कीजिए ये सूरह कैसे एक दायरे में पूरी हुई। ये उन लोगों से खुली जो **चाहेंगे** कि काश वो मुसलमान होते — एक चाहत जो बहुत देर से आती है। और ये मोमिन को ये कहते हुए ख़त्म होती है कि आख़िरी लम्हे तक इबादत करता रहे, **ताकि जब वो लम्हा आए, वो चाहने वालों में से न हो।**

इन दोनों के दरमियान, इसने तुम्हें वो सब दिया जो चाहिए: एक किताब जिसकी हिफ़ाज़त अल्लाह ख़ुद करते हैं, ऐसे ख़ज़ाने जो कभी ख़त्म नहीं होते, एक दुश्मन जिसका तुम पर कोई ज़ोर नहीं, और एक रब जो ठीक जानता है कि तुम्हारा सीना कब तंग है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. खाने, मज़े उड़ाने और 'बाद में, बाद में' की ज़िंदगी एक लंबी हसरत पर ख़त्म होती है — 'शायद वो चाहेंगे कि काश वो मुसलमान होते'।

2. अल्लाह ने इस किताब की हिफ़ाज़त ख़ुद अपने ज़िम्मे ली — और इसे दिलों में रखा, सिर्फ़ काग़ज़ पर नहीं।

3. हर चीज़ के ख़ज़ाने उन के पास हैं और कभी ख़त्म नहीं होते; वो एक मालूम अंदाज़े से जारी करते हैं।

4. शैतान का वाहिद आला सजाना है — उस का तुम पर कोई ज़ोर नहीं; वो पेश करता है, तुम क़ुबूल करते हो।

5. जन्नत से लुत्फ़ से पहले सीनों से रंजिशें निकाली जाती हैं — वो निकालना अभी शुरू करो।

6. अल्लाह की रहमत से मायूसी आजिज़ी नहीं; क़ुरआन इसे गुमराही के साथ रखता है।

7. जब तुम्हारा सीना तंग हो, वो पहले उसे तस्लीम करते हैं — फिर सजदा तजवीज़ करते हैं; और इबादत 'यक़ीन' आने तक जारी रहती है।

या अल्लाह, हमारे दिलों की हिफ़ाज़त कीजिए जैसे आप अपनी किताब की करते हैं, हमारे सीनों को रंजिश से ख़ाली कीजिए, और जब यक़ीन आए तो हमें अपनी इबादत में पाइए। आमीन।